(पृष्ठ 24 का शेषांश)

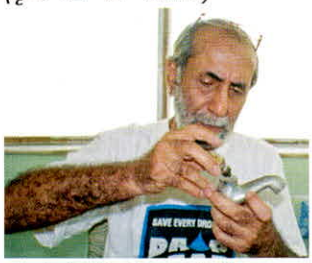

मुंबई के डोंगरी इलाके में बचपन गुजार चुके आबिद सुरती

कि इस प्रकार के प्रयासों से यदि बूंद बचेगी तो गंगा भी बच जाएगी। इसलिए पहले एक–एक बूंद बचाने का प्रयास करना चाहिए।

मुंबई के डोंगरी इलाके में बचपन गुजार चुके आबिद सुरती को उन दिनों किसी–किसी दिन 20 लीटर पानी में ही पूरे दिन का गुजारा करना पड़ता था। क्योंकि साझे नल में इससे ज्यादा पानी मारामारी करके भी नहीं मिल पाता था। पानी की यह तंगी राजस्थान में एक कलश पानी के लिए मीलों का सफर तय करने वाली महिलाओं की जिंदगी का अनुभव कराने जैसी थी। इसलिए मुंबई में आए–दिन फटने वाले पानी के पाइपों एवं टैंकरों से गिरते पानी को रोक पाना उनके वश में नहीं था। लेकिन एक दिन किसी मित्र के घर गए सुरती को जब वहां नल से टपकता पानी दिखाई दिया तो उन्होंने सोच लिया कि इसे तो हम ठीक कर ही सकते हैं। और यहीं से हुआ उनकी – हर एक बूंद बचाओ – मुहिम का आगाज।

मुंबई से सटे ठाणे जिले के मीरा रोड निवासी सुरती अब अपने क्षेत्र की बहुमंजिला इमारतों के सेक्रेटरियों से मिलकर उनकी बिल्डिंग के सभी फ्लैटों में जाने की अनुमति लेते हैं और सोसायटी के प्रवेशद्वार पर अपनी मुहिम का एक पोस्टर चिपका देते हैं। अगले रविवार की सुबह एक प्लम्बर और एक महिला सहायक के साथ (ताकि घरों में पुरूषों की अनुपस्थिति में भी जाया जा सके)

एक दिन किसी मित्र के घर गए सुरती को जब वहां नल से टपकता पानी दिखाई दिया तो उन्होंने सोच लिया कि इसे तो हम ठीक कर ही सकते हैं। और यहीं से हुआ उनकी – हर एक बूंद बचाओ – मुहिम का आगाज।

जा पहुंचते हैं। हर फ्लैट में जाकर रसोई, बाथरूम एवं अन्य स्थानों पर लगे नलों की जांच करते हैं। वर्ष 2007 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से उन्हें गुजराती साहित्य के हिंदी अनुवाद के लिए एक लाख रूपए का पुरस्कार मिला। संयोग से वह वर्ष अंतर्राष्ट्रीय जल संरक्षण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा था। उन्हीं दिनों उन्होंने किसी अखबार में यह खबर पढ़ी कि किसी नल से एक सेकैंड में यदि एक बूंद पानी टपक रहा है तो एक माह में 1000 लीटर, अर्थात् बिसलरी की एक हजार बोतलों की बरबादी हो जाती है। बस यहीं से उन्होंने एक–एक बूंद बचाने का संकल्प ले लिया और हिंदी संस्थान से पुरस्कार में मिले एक लाख रूपए इस संकल्प की भेंट चढ़ा दिए। सेव एवरी ड्रॉप और ड्रॉप डेड लिखे हुए पोस्टर, पर्चे और टी शर्ट्स छपवाई और निकल पड़े एक–एक बूंद बचाने।

स्रोत–www.hindimedia.in

गर्विता
आल इण्डिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एण्ड हियरिंग, मैसूर, कर्नाटक

जलविज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा

क्र.सं	संस्थान का नाम तथा वेबसाइट	पाठ्यक्रम
1.	सिविल इंजीनियरी विभाग, अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई – 600025 (http: www.annauniv.edu) जल संसाधन केंद्र अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई – 600025	बी.ई. कृषि एवं सिंचाई इंजीनियरी एम.ई जलविज्ञान एवं जल संसाधन इंजीनियरी एम.ई. सिंचाई जल प्रबन्धन एम.ई. समाकलित जल संसाधन प्रबन्धन
2.	भूविज्ञान विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ – 202002 (उ0प्र0) (http: www.amu.ac.in)	भूजल विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
3.	आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम–530003 (आन्ध्र प्रदेश) (http: www.andhrauniversity .info/courses.html)	एम.एस.सी. / एम.एस.सी.(टैक) जलविज्ञान
4.	भारत विश्वविद्यालय, चेन्नई – 600073 (http: www.bharatuniv.com/ courses.html)	एम. टैक सिंचाई इंजीनियरी एम. टैक जलविज्ञान एवं जल संसाधन
5.	दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (http: www.dce.ac.in/acad programs)	एम. ई. द्रव–विज्ञान तथा बाढ़ नियन्त्रण, दिल्ली – 110042
6.	सिविल इंजीनियरी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास, चेन्नई – 600036 (http: www.civil.iitm.ac.in)	पर्यावरणीय एवं जल संसाधन इंजीनियरी में एम. टैक, एम. एस., पी. एच. डी.
7.	जल संसाधन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू प्रौद्योगिकीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद–500085 (आन्ध्र प्रदेश) (http: www.jntu.ac.in/courses-water-resources.php)	एम. टैक–जल एवं पर्यावरणीय प्रौद्योगिकी पी. एच. डी. जल संसाधन
8.	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर – 492010 (छत्तीसगढ़) (http: www.nitrr.ac.in/dept-civil.php)	एम. ई. सिंचाई एवं जल संसाधन इंजीनियरी
9.	महाराजा सायाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा – 390001 (http: www.msubaroda.ac.in)	बी. ई. सिंचाई एवं जल प्रबन्धन एम. ई. सिंचाई एवं जल प्रबन्धन एम. ई. जल संसाधन इंजीनियरी
10.	श्री गुरू गोबिंद सिंह जी, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, नांदेड़ – 431603 (http: www.sggs.ac.in)	बी. टैक जानपद एवं जल प्रबन्धन एम. टैक जानपद (जल प्रबन्धन)
11.	षणमुगा कला विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं अनुसंधान अकादमी, तंजाबूर – 613402 (तमिलनाडु) (http: www.sastra.edu)	एम. टैक द्रव विज्ञान एवं जल संसाधन इंजीनियरी

मुहम्मद फुरकान उल्लाह
सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की